राष्ट्रीय आय लेखांकन (National Income Accounting)

- राष्ट्रीय आय लेखांकन का तात्पर्य उन विधियों या तकनीको से है जिनका उपयोग किसी भी अर्थव्यवस्था मे समग्र रूप से आर्थिक गतिविधियाों के मापन के लिए होता है । जिस प्रकार एक व्यक्ति या एक संस्था की आय की गणना की जा सकती है , ठीक उसी प्रकार एक देश की आय की भी गणना की जा सकती है । साइमन कुजनेट्स को राष्ट्रीय आय लेखांकन का जनक माना जाता है ।
- राष्ट्रीय आय लेखांकन के विभिन्न तरीकों को समझने से पहले हमारे लिए अर्थव्यवस्था की समग्र गतिविधियो के सम्बंध मे जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है । नीचे दिया गया फ्लो चार्ट एक खुली अर्थव्यवस्था मे संसाधनों (धन/आय) के चक्रीय प्रवाह को दर्शाता है ।

CAREER FOUNDATION
जनन राष्ट्र सेवा का

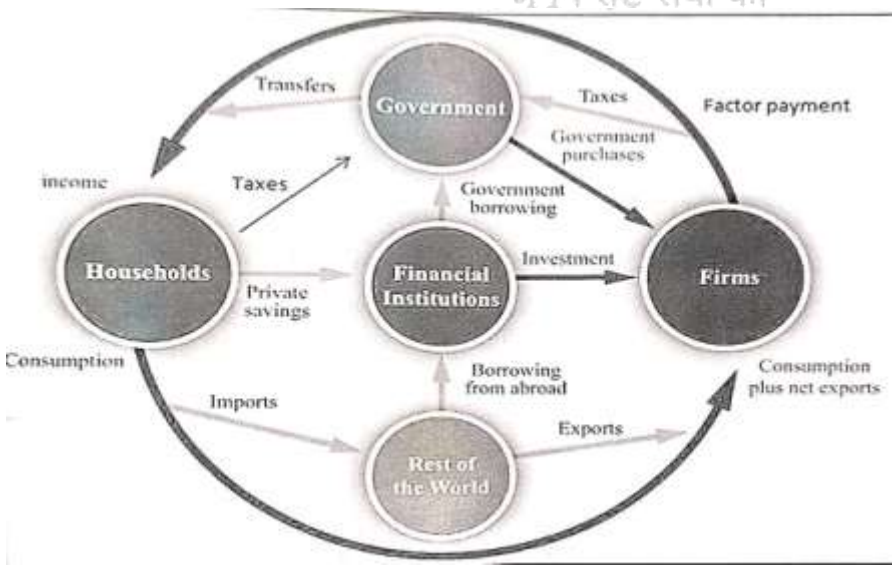

- उत्पादन , उपभोग और निवेश अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण गतिविधियां है । इन्ही के संचालन मे अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रको के बीच लेन–देनो

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

मे आय और व्यय के प्रवाह का चक्रीय स्वरूप हो जाता है । यह दो सिद्धांतो पर आधरित है :

- ○ क्रेता का व्यय विक्रेता का आय बन जाती है और
- ○ वस्तुएँ और सेवाएं विक्रेता से क्रेता की ओर प्रवाहित होती है । इनके लिए मौद्रिक भुगतान विपरीत दिशा मे अर्थात क्रेता से विक्रेता की ओर प्रवाहित होता है । इस प्रकार वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह (वास्तविक प्रवाह) एक दिशा मे होते है तो दूसरी ओर मोद्रिक भुगतान के रूप मे प्रवाह (मौद्रिक प्रवाह) होते है । ये दोनों प्रवाह एक साथ मिलकर चक्रीय प्रवाह कहलाते है ।

- परिवार क्षेत्रक , फर्म (व्यापारिक कंपनी) से वस्तुएँ एवं सेवाएँ खरीदता है । वस्तुओं एवं सेवाओं की बिक्री से जो आय प्राप्त होता है उनका प्रयोग फर्म के स्वामियों द्वारा मजदूरों को मजदूरी का भुगतान करने , भू–स्वामी को किराया देने और स्वयं को लभांश का वितरण आदि करने मे किया जाता है । इस प्रकार सकल घरेलू उत्पादन **(GDP)** वस्तुतः वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए लोगो द्वारा बाजार मे व्यय की गई कुल राशि के बराबर होता है । साथ ही यह उत्पादन के कारकों के लिए बाजार मे फर्मो द्वारा भुगतान की गई कुल मजदूरी , किरायों और लाभ के बराबर भी होती है ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- उनर्युक्त फ्लो चार्ट द्वारा सामान्य अर्थव्यवस्था मे परिवारों एवं फर्मो के मध्य हुए सभी लेनदेन का वर्णन किया गया है । यह फ्लो चार्ट इस विषय वस्तु को यह मानकर सरलीकृत करता है कि सभी वस्तुएं एवं सेवाएं लोगो द्वारा खरीदी जाती है और लोग अपनी संपूर्ण आय का खर्च करते है ।
- इसमें यह दर्शाया गया है कि आय/धन लगातार लोगो से फर्मों की ओर गतिशील होता है और पुनः लोगों के पास वापस आता है ।

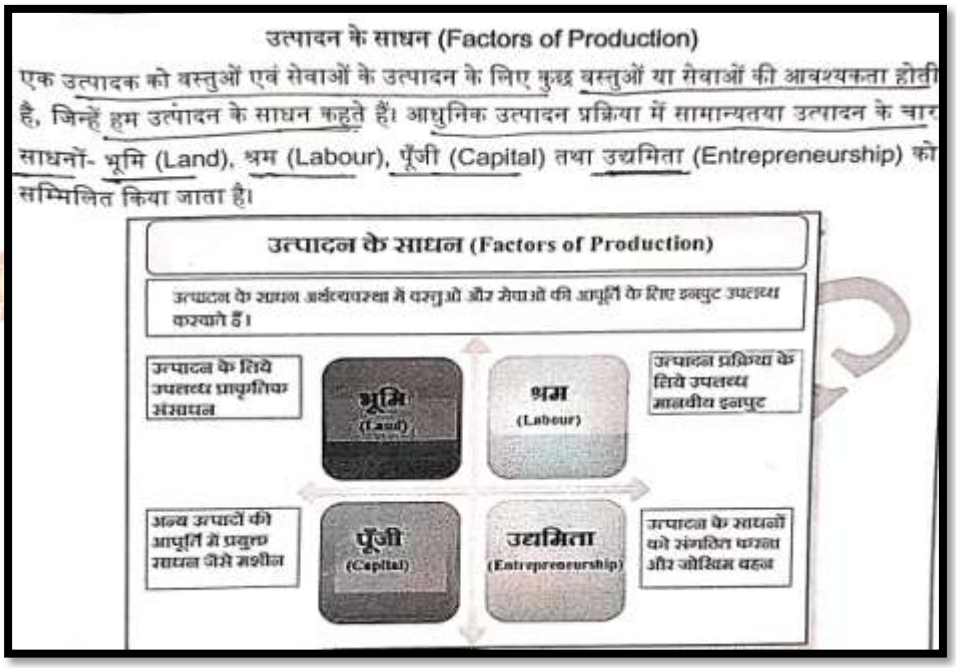
उत्पादन के साधन (Factors of Production)

एक उत्पादक को वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के लिए कुछ वस्तुओं या सेवाओं की आवश्यकता होती है, जिन्हें हम उत्पादन के साधन कहते हैं। आधुनिक उत्पादन प्रक्रिया में सामान्यतया उत्पादन के चार साधनों- भूमि (Land), श्रम (Labour), पूँजी (Capital) तथा उद्यमिता (Entrepreneurship) को सम्मिलित किया जाता है।

- धन के इस प्रवाह को (GDP) द्वारा मापा जाता है । किसी अर्थव्यवस्था के लिए इसकी गणना निम्नलिखित दो तरीकों से की जा सकती है :
    - लोगो द्वारा किये गये कुल व्यय को जोड़कर या

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

○ फर्मो द्वारा भुगतान की गई कुल आय (मजदूरी , किराया , लाभ) को जोड़कर

- चूंकी किसी अर्थव्यवस्था से सभी व्यय वस्तुतः किसी आय के रूप मे होते है , इसलिए हम किसी पद्धति से **GDP** की गणना करें , **GDP** का मान समान ही प्राप्त होता है ।

खुली एवं बंद अर्थव्यवस्था (Open and closed Economy)

- खुली अर्थव्यवस्था से तात्पर्य ऐसी अर्थव्यवस्था से है जिसके विश्व के अन्य देशों से आर्थिक संबंध होते है । आज विश्व के अधिकांश देश खुली अर्थव्यवस्थाओं के उदाहरण हैं । जिन देशों (अर्थव्यवस्थाओं) के शेष विश्व से कोई आर्थिक लेन–देन नही होते , उन्हें हम बंद अर्थव्यवस्थाएँ कहते हैं । वर्तमान समय मे विश्व मे ऐसे किसी देश का होना बहुत कठिन है ।
- एक बंद अर्थव्यवस्था के अंतर्गत हम उसे देश की सीमाओं के अंतर्गत होने वाली आर्थिक गतिविधियों का ही विश्लेषण करते है । ऐसी अर्थव्यवस्था में आयात , निर्यात एवं विदेशी निवेश शून्य होता है ।
- इसके विपरीत खुली अर्थव्यवस्था में हम एक देश के आर्थिक लेन–देन का अध्ययन दूसरे देशों के साथ करते हैं , अर्थात इसमें विदेशी क्षेत्र भी जुड़ जाता है । इसमें आयात , निर्यात , विदेशी निवेश एवं विनिमय दर जैसी महत्वपूर्ण अवधारणाओं का भी विश्लेषण किया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

राष्ट्रीय आय लेखांकन का महत्व

- अंतराष्ट्रीय तुलना :– राष्ट्रीय आय लेखांकन के माध्यम से किसी देश की अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर और उस देश के विकास का मापन संभव होता है । इसका प्रयोग विभिन देशों के लोगो के जीवन स्तर की तुलना करने के लिए किया जा सकता है ।
- व्यावसायिक निर्णय :– राष्ट्रीय आय लेखांकन अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों के सापेक्ष योगदान और इन क्षेत्रकों की अभीष्ट क्षमता है । यह क्षमता व्यवसायी वर्ग का भविष्य मे उत्पादन हेतु विभिन्न क्षेत्रों के चयन करने और योजना निर्माण मे मार्गदर्शन करती है ।
- नीति निर्माण :– राष्ट्रीय आय लेखांकन अर्थव्यवस्था में आय एवं संसाधनों के वितरण पर प्रकाश डालता है , जिससे सरकार को देश मे समानता को बढावा देने और विकासात्मक कार्यो हेतु संसाधनों के समूचित आवंटन मे मदद मिलती है ।
- नीतिगत मूल्यांकन :– राष्ट्रीय आय लेखांकन , विशिष्ट आर्थिक उपलब्धियों और विफलताओं को उजागर करता है । इस प्रकार यह सरकारी नीतियां के मूल्यांकन मे लोगों की मदद करता है ।
- वार्षिक बजट :– राष्ट्रीय आय लेखांकन से सरकार को अपने बजटीय नीति को आकार देने मे मदद मिलती है । आय एवं रोजगार की अनिश्चिता को दूर करने के लिए सरकार राष्ट्रीय आय लेखांकन

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

विश्लेषण करती है और तत्पश्चात आवश्यकतानुसार अपनी कर एवं उधार लेने हेतू नीति बनाती है । किसी अर्थव्यवस्था में मंदी या मुद्रास्फीति की समस्या को दूर कनने के लिए सरकार घाटे या अधिशेष वाला बजट पेश करती है ।

- राष्ट्रीय व्यय मे सहायक :– राष्ट्रीय आय के आंकड़े यह स्पष्ट करते है कि राष्ट्रीय व्यय को निवेश और उपभोग मे कैसे विभाजित किया जाए । आय लेखांकन से समष्टि अर्थव्यवस्था की क्रियाविधि को समझाने मे मदद मिलती है ।

CAREER FOUNDATION

2. राष्ट्रीय आय की अवधारणाएं (Concepts of National Income)

समय के साथ–साथ राष्ट्रीय आय की गणना की विधि मे कई सुधार हुए हैं। किसी देश की आय की गणना हेतु अर्थशास्त्रियों द्वारा चार प्रकार की अवधारणाओं – **GDP , GNP , NDP** और **NNP** की उपयोग किया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) :-

- किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समयावधि (एक वर्ष या तिमाही या अर्ध–वार्षिकी) में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल बाजार मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहते है । भारत के लिए यह समयावधि 1 अप्रैल से 31 मार्च तक है ।
- अतः यह किसी देश की घरेलू सीमा के अंतर्गत निवासियों या गैर–निवासियों या फर्मो द्वारा एक वित्तीय वर्ष मे उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य होता है । सरल शब्दों में कहें तो यह किसी व्यक्ति या फर्म की राष्ट्रीयता पर विचार किए बिना देश की घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य का मापन करता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- उदाहरण के लिए , एक जापानी कंपनी द्वारा भारत में विनिर्मित कारों को भारत के **GDP** में सम्मिलत किया जाएगा जबकि टाटा मोटर्स द्वारा ब्रिटेन में विनिर्मित जगुआर कारों को भारत के **GDP** में सम्मिलत नही किया जाएगा ।
- **GDP** केवल वस्तुओं एवं सेवाओं के अंतिम उत्पादन को ही संदर्भित करता है । इसमें केवल पूर्ण या अंतिम वस्तुओं को इसलिए सम्मिलित करते है ताकि (वस्तुओं एवं सेवाओं से संबंधित) कच्चे माल, मध्यवर्ती

उत्पाद और अंतिम उत्पादों की दोहरी या तिहरी गणना से बचा जा सके ।

आर्थिक या घरेलू सीमा

सिस्टम ऑफ नेशनल एकाउन्ट्स मे घरेलू सीमा के रूप मे परिभाषित किया गया है । राष्ट्रीय आय लेखांकन में इसका अलग अर्थ तथा महत्व है । घरेलू या आर्थिक सीमा वैसे देश की भौगोलिक सीमा से संबंधित होती है तथा आर्थिक सीमा में भौगोलिक सीमा को सम्मिलत किया जाता है पर आर्थिक सीमा तथा भौगोलिक सीमा बिल्कुल एक ही नही होगी । आर्थिक सीमा के अंतर्गत निम्नाकिंत को सम्मिलत किया जाता है –

- वायु क्षेत्र तथा क्षेत्रीय जल क्षेत्र जिस पर मत्स्यन , ईंधन या खनिज दोहन का अधिकार राष्ट्र का हो ।
- शेष विश्व मे सीमान्तर्गत विदेशी अंतःक्षेत्र जिसके अंतर्गत दूतावास , मिलिट्री बेस , प्रवजन कार्यालय भी सम्मिलत है ।
- मुक्त क्षेत्र , कस्टम के नियंत्रण में आने वाले समुद्रतट के उद्यम , पर इसके अंतर्गत देश की सीमा में दूसरी सरकारों या देशों के विदेशी अंतः क्षेत्र नही आयेगें जिनमें उनके दूतावास हैं या जहाँ विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थायें या उनके कार्यालय या अन्य देशों के मिलिट्री बेस है ।

इस प्रकार जहां तक आर्थिक सीमा का प्रश्न है इसमें देश की भौगोलिक सीमा का वह भाग नही सम्मिलत होगा जो दूसरे देशों को विदेशी अंतः

CAREER FOUNDATION जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

क्षेत्र के रूप मे दूतावास या अन्य कार्यालयों के लिए दिए गए हैं या अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को दिए गए है या अन्य जिनका उल्लेख ठीक ऊपर किया गया है । इस दृष्टि से आर्थिक सीमा भौगोलिक सीमा से छोटी होगी पर इसमें विश्व के अन्य देशों के भी ऐसे हिस्से जो इस देश ाके मिलिट्री बेस , दूतावासों के रूप में विदेशी अंतः क्षेत्र`क रूप में प्राप्त हुए होंगे उन्हे उक्त देश की आर्थिक सीमा (घरेलू सीमा) मे सम्मिलता किया जायेगा , यद्यपि वह दूर–दराज तक भी किसी रूप मे उस देश की भौगोलिक सीमा का भाग नही हो सकता । इस दृष्टि से कुल आर्थिक सीमा भौगोलिक सीमा से बड़ी होगी ।

- देश की भौगोलिक , राजनैतिक एवं सामुद्रिक सीमा ।
- मछली पकड़ने की नौकाएं , दो या दो से अधिक देशों के मध्य चलने वाले जहाज , वायुयाान आदि ।
- पेट्रोलियम एवं गैस अन्वेषण के लिए समुद्र में स्थित स्थान ।
- देश के विदेशों में दूतावास , वाणिज्यिक दूतावास एवं सैनिक अड्डें ।

- उदाहरण के लिए , ऑटोमोबाइल के मूल्य में पहले से ही उसके विनिर्माण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले इस्पात , कांच , रबड़ और अन्य घटकों के मूल्य सम्मिलत होते है । इन्हें नीचे संक्षिप्त में समझाया गया है :

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- ○ अंतिम उत्पाद : इसका अर्थ है 'अंतिम उपभोग के लिए क्रया की गयी वस्तुएं एवं सेवाएं ।
- ○ मध्यवर्ती वस्तुएं अथवा उत्पादन के कारक या कच्चा माल : किसी अन्य उत्पाद के उत्पादन में इनपुट या आगत या कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त उत्पाद को मध्यवर्ती वस्तुओं की श्रेणी में रखा जाता है ।

- दोहरी गणना से बचाव के दो तरीके हैं :
  - ○ केवल अंतिम उत्पाद के मूल्य की गणना करना , या
  - ○ किसी वस्तु के उत्पादन के आरंभिक चरण से लेकर अंतिम चरण तक हुए मूल्य वर्धन की गणना करता । उसके बाद उक्त वस्तु के विक्रय मूल्य में से मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को घटा देना ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- कोई वस्तु अंतिम है या माध्यमिक , यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वह वस्तु उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग मे आ रही या उपभोग हेतु प्रयोग आ रही है । एक ही वस्तु किसी स्थिति में अंतिम होगी तो दूसरी स्थिति में माध्यमिक हो सकती है ।
- जैसे बेकरी में ब्रेड बनाने मे प्रयोग में आने वाला आटा माध्यमिक वस्तु है ,जबकि घर में रोटी बनाने में प्रयोग मे आने वाला आटा उपभोग वस्तु (अन्त्य) है ।

. सांकेतिक GDP एवं वास्तविक GDP (Nominal & Real GDP)

- सांकेतिक **GDP :** जब वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य की गणना चालू वर्ष की कीमतों पर की जाती है तो वह चालू मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद अर्थात् साकेंतिक **GDP** कहलाता है ।
- वास्तविक **GDP :** जब वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य की गणना आधार वर्ष की कीमतों पर की जाती है , तो उसे स्थिर मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद अथवा वास्तविक **GDP** कहते हैं । अर्थात् वास्तविक **GDP** द्वारा वर्तमान वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों की गणना आधार वर्ष के कीमतों पर की जाती है । उल्लेखनीय है कि आधार वर्ष पर मूल्य स्थिर होते है ।
- वास्तविक **GDP** वस्तुतः **GDP** की गणना करने का एक बेहतर तरीका है क्योंकि एक विशेष वर्ष में अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की उच्च दर के कारण **GDP** में अचानक उछाल देखा जा सकता है । इसलिए , वास्तविक **GDP** हमें मुद्रास्फीति और मुद्रा की क्रय शक्ति में परिवर्तन के बावजूद, उत्पदन में हुई वास्तविक वृद्धि या कमी को निर्धारित करने में मदद करता है ।
- इसे बेहतर तरीके से समझने के लिए , आप एक ऐसी अर्थव्यवस्था पर विचार कीजिए जो केवल सेब का उत्पादन करती है । मान लीजिए कि वर्ष 2010 के दौरान एक अर्थव्यवस्था में 100 सेब उत्पादित हुए थे और

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

प्रत्येक सेब की लागत 1 डॉलर थी । इस प्रकार वर्ष 2010 में उक्त अर्थव्यवस्था का सांकेतिक **GDP 100** डॉलर (1 डॉलर को 100 से गुणा करना) होगी । जब मान डॉलर तक बढ गई । अब वर्ष 2015 के लिए सांकेतिक **GDP** 150 डॉलर (3 डॉलर को 50 से गुणा करने पर प्राप्त) होगा । इस प्रकार हमें यह प्रतीत होता है कि 2010 की तुलना मे 2015 मे **GDP** में वृद्धि हुई है , परंतु वास्तव में 2015 के दौरान अर्थव्यवस्था में उत्पादन में कमी आई है ।

- अब यदि वर्ष 2010 को आधार वर्षा के रूप मे मान लिया जाए तो , वर्ष 2010 के लिए वास्तविक **GDP** 100 डॉलर हो जाएगी जबकि वर्ष 2015 के लिए यह 2010 की स्थिर कीमतों पर (आधार वर्ष की कीमत पर) 50 डॉलर होगी । इस प्रकार स्पष्ट है कि यहां वास्तविक **GDP** में गिरावट अर्थव्यवस्था में उत्पादन मे गिरावट के अनुपात में है । अतः वास्तविक **GDP** किसी भी अर्थव्यवस्था की सांकेतिक **GDP** की तुलना मे एक बेहतर तस्वीर प्रस्तुत करता है । (आधार वर्ष को आगे विस्तार मे समझाया गया है)

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2.2 सकल राष्ट्रीय उत्पादन (GNP)

- **GNP** और **GDP** की अवधारणायें परस्पर घनिष्ट रूप संबंधित है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि **GDP** की अवधारणा की अर्थ एक निश्चित समयवधि में किसी देश की घरेलू सीमा निवासियों और गैर–निवासियों दोनो द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों से है । इस प्रकार **GDP** में 'उत्पादन किसके द्वारा किया गया है' के स्थान पर उत्पादन कहां पर हुआ है' पर ध्यान दिया जाता है ।
- दूसरी ओर , घरेलू सीमा के भीतर या बाहर एक देश के निवासियों द्वारा उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मूल्य को **GNP** कहते है । इस प्रकार जब भारत **GNP** की गणना की जाती है तो इसके अंतर्गत भारत के भीतर तथा विश्व के अन्य देशों मे भारतीय नागरिकों द्वारा उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मूल्यों की भी गणना की जाती है ।
- आइए एक उदाहरण के माध्यम से इसे सरल तरीके से समझते है, जैसे– माइक्रोसॉफ्ट **USA** की एक फर्म है । जब यह भारत में कोई कंपनी खोलती है , ता उसके उत्पादन का मूल्य भारत के **GDP** में सम्मिलत किया जाएगा लेकिन भारत की **GNP** की गणना करते समय इसक सम्मिलत नही किया जाएगा । इसी तरह जब इंफोसिस या

CAREER FOUNDATION
जनन राष्ट्र सेवा कर
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

TCS जैसी भारतीय कंपनियां अमेरिका में अपनी सेवाएँ उपलब्ध करवाती है ,तो इन सेवाओं का मूल्य भारत के GDP में सम्मिलत नही किया जाता है , लेकिन भारत के GNP की गणना करते समय उन्हें सम्मिलित किया जाता है । इस प्रकार GDP 'जहाँ उत्पादन होता है ' उससे संबंधित है । जबकि दूसरी ओर , GNP 'जो उत्पादन करते हैं ' से संबंधित है ।

GNP = GDP + विदेश से निवल साधन आय (Net Factor Income from Abroad : NFIA)

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- यदि किसी अर्थव्यवस्था में FDI का अंतर्प्रवाह काफी अधिक है तथा बहिर्प्रवाह अम्यल्प है तो ऐसी परिस्थिति में सामान्यतया उक्त देश की GDP उसके GNP की तुलना मे अधिक होगी । वहीं दूसरी ओर , यदि किसी देश के नागरिक अत्यधिक संख्या में विदेश जाते हैं एवं वहां आर्थिक गतिविविधयों में संलग्न होकर अपने गृह देश में बहुत अधिक पैसा भेजते है , जबकि उसे में विदेशी नागरिकों की आर्थिक गतिविधियाँ न्गान्य है (अर्थात् विदेशी नागरिक यहाँ से अपने गृह देश में कम पैसा भेजे है) तो ऐसी परिस्थितियों में उक्त देश की GNP उसके GDP से अधिक होगी । भारत की बात करें तो इसकी GNP इसके GDP

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

तुलना में कम हैं क्योंकि भारत मे विदेशों से प्राप्त निवल आय सदैव नकारात्मक रही है ।

- यद्यपि **GDP** का उपयोग किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की स्थिति को जानने के लिए किया जाता है , किंतु कुछ अर्थशास्त्री इसे एक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति को प्रतिबिंबित करने वाला नही मानते हैं । चूंकि **GDP** की गणना में विदेशी कंपनियों द्वारा किसी देश मे अर्जित लाभ को भी सम्मिलत किया जाता है और ये लाभ इन विदेशी निवेशको द्वारा अपने गृह देश (या अन्य देश में भी) में पुनः प्रेषित कर दिए जाते हैं । अतः ऐसी स्थिति मे यदि देश के बाहर भेजा जाने वाला उक्त लाभ किसी देश के नागरिकों द्वारा विदेशों मे अर्जित आय एवं विदेशी परिसंपत्तियों से हुए लाभ की तुलना में बहुत अधिक हैं , तो निश्चित ही उसे देश की **GNP** उसे **GDP** की तुलना में अत्यंत कम होगी ।

2.2.1. विदेशो से प्राप्त साधन (कारक) आय (Net Factor Income from Aboroad : NFIA)

- विदेश से प्राप्त साधन आय **(NFIA)** वस्तुतः बहुत ही कम है क्योंकि नागरिकों द्वारा सृजित (विदेशो से) साधन आय और विदेशियों को दिए जाने वाले भुगतान कमोबेश एक–दूसरे को प्रतिसंतुलित कर देते है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

संक्षेप में , **NFIA = GNP-GDP**

2.3 GDP वैश्विक स्तर पर सबसे स्वीकार्य संकेतक क्यों है ?

- **GDP** संवृद्धि दर (आर्थिक संवृद्धि का मापक) वस्तुतः किसी राष्ट्र के कल्याणकारी गतिविधियों हेतु एक प्रमुख संकेतक होती है । साथ ही यह 'विकास' के कई अन्य मापकों , जैसे–साक्षरता , स्वास्थ्य सुविधाएं आदि संकेतकों से भी संबंधित होता है ।
- वर्तमान मे यह स्पष्टतया परिभाषित है और इसकी गणना करना अपेक्षाकृत सरल है ।
- चूंकि यह एक मौद्रिक/गणितीय/लेखा गणना है औश्र इसकी एक स्थातिप पद्धति भी विद्यमान है , अतः यह वस्तुनिष्ठ है (इसके विपरीत "खुशहाली" और " राजनीतिक स्वतंत्रता" जैसे सूचक व्यक्तिनिष्ठ है , जिन्हें मापना कठिन है) ।
- **GDP** का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और लगभग सभी देश अपने राष्ट्रीय आय की गणना में इसी पद्धति का उपयोग करते हैं । अतः इसके माध्यम से विभिन्न देशों के मध्य तुलना करने में सुविधा होती है ।
- अपने वृहद इतिहास और मानक पद्धति के कारण **GDP** को नीति निर्माताओं द्वारा समझना अपेक्षाकृत आसान है।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2.4 मूल्यहास (Depreciation)

- उत्पादन प्रक्रिया में दूसरी वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त सभी मशीनों और उपकरणों मे कुछ टूट–फूट होती हैं । आर्थिक बोल–चाल की भाषा में , ऐसी पूंजीगत वस्तुओं की वह हानि जिसका प्रत्येक अर्थव्यवस्था को टूट–फूट के रूप में भुगतान पड़ता है , मूल्यह्रास कहलाता है ।
- अर्थव्यवस्था में उत्पादित पूंजीगत वस्तुओं के एक भाग को इस टूट–फूट के बदले मे रखा जाना चाहिए , अन्यथा एक राष्ट्र की उत्पादक क्षमता कम हो जाएगी । इस प्रकार रखे गए पूंजी को कैपिटल कंजम्पशन अलाउंस कहते है ।
- इस प्रकार ऐसे परिदृश्य में किसी फर्म में हुई निवेश व्यय (**Investment expenditure)** को दो भागों में रखा जाता है । इसके एक भाग का उत्पादन के लिए नई पूंजीगत वस्तुओं और मशीनरी को खरीदने मे उपयोग किया जाता है । इसे निवेश कहा जाता है , क्योंकि इससे फर्मो की उत्पादन क्षमता का विस्तार किया जा सकता है ।
- इसके दूसरे भाग को उपयोग में लाई गई पूंजीगत वस्तुओं को प्रतिस्थापित करने या मौजूदा पूंजीगत वस्तुओं के रखरखाव के लिए

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

व्यय किया जाता है । इस हेतु हुए व्यय को मूल्यहास व्यय कहा जाता है ।

- किसी फर्म द्वारा इन दोनो राशियों के रूप में किए गए निवेश को सकल निवेश कहते है ।

सकल निवेश = निवल निवेश + मूल्यह्रास
(Gross Investment = Net Investment + Depreciation)
या
निवल निवेश = सकल निवेश - मूल्यह्रास
(Net Investment = Gross Investment – Depreciation)

यदि निवल निवेश सकारात्मक है तो यह राष्ट्र की उत्पादन और आउटपुट को बढाता हैं । इसे किसी छोटे फर्म या एक संयंत्र के स्तार पर आसानी से सत्यापित किया जा सकता है । अर्थात् एक फर्म के लिए किसी भी वर्ष में स्थापित नई मशीनों की संख्या उन मशीनों की तुलना में अधिक होनी चाहिए जो उस वर्ष के दौरान उपयोग में लाई गई हैं ।

सामान्यतया सरकार ही किसी अर्थव्यवस्था में मूल्यह्रास की दर तय करती है और इसकी घोषण करती है कि किस संपति में कितना मूल्यह्रास होग तथा इसकी एक सूची भी प्रकाशित की जाती है । अर्थव्यवस्था के विभिनन क्षेत्रकों द्वारा इसका उपयोग भिन्न–भिन्न प्रकार की परिसंपत्तियों में मूल्यह्रास के वास्तविक स्तर को निर्धारित करने के लिए किया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जन्म राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2.5. निवल घरेलू उत्पाद (NDP)

'मूल्यह्रास की राशि को समायोजित करने के बाद जब **GDP** की गणना की जाती है तो ऐसे **GDP** को ही **NDP** कहते हैं । वस्तुतः **NDP** , निवल **GDP** ही है , (अर्थात **GDP** - मूल्यह्रास) साधरण शब्दों में , वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के दौरान परिसंपतियों मे टूट–फूट (मूल्यह्रास) की कुल राशि को **GDP** में से घटाने पर **NDP** प्राप्त होता है ।

NDP = GDP - मूल्यह्रास (NDP= GDP- Depreciation)

- किसी अर्थव्यवस्था की **NDP** हमेशा **GDP** की तुलना में कम होती है , क्योंकि मूल्यह्रास को कभी भी शून्य तक नहीं लाया जा सकता है तथा यह हमेशा धनात्मक रहता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

2.6. निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)

- सकल राष्ट्रीय उत्पाद (**GNP**) में से मूल्यह्रास को घटाकर **NNP** प्राप्त किया जाता है ।

NNP = GNP - मूल्यह्रास (NNP=GNP- Depreciation)

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं की तुलना करने के लिए **NDP** और **NNP** की अवधारणाओं का उपयोग नही किया जाता है , क्योंकि मूल्यह्रास की गणना की विधि अलग–अलग राष्ट्रों मे भिन्न–भिन्न तरीके से होती है ।

बाजार मूल्य और साधन (कारक) लागत की अवधारणा

(The Concept of Market Price and Factor Cost)

- बाजार मूल्य वस्तुतः वस्तुओं एवं सेवाओं के वास्तविक लेनदेन के मूल्य को संदर्भित करता है । इसमें अप्रत्यक्ष कर तथा सब्सिडी सम्मिलत होते हैं । अप्रत्यक्षय कर वस्तु के मूल्य को बढा देते है और सब्सिडी इसको कम करती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- साधन लागत वस्तुतः वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में प्रयुक्त या उपभोग की गयी उत्पादन के सभी कारकों की लागत को संदर्भित करता है । इसमें भूमि के लिए किराया , पूंजी के लिए ब्याज, श्रम के लिए मजूदूदी और उद्यमिता के लिए लाभ सम्मिलत होते है । वास्तविक उत्पादन लागत है जिस पर किसी फर्म द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं को उत्पाद किया जाता है । साधन लागत पर गणना करते समय अप्रत्यक्ष करों की घटाया जाता है तथा सरकार द्वारा दी गयी सब्टिसडी को जोड़ा जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

दूसरे शब्दों में ,

साधन लागत **(FC)** = बाजार मूल्य – निवल अप्रत्यक्ष कर

{ Factor cost (FC) = Market Price - Net Indirect Taxes }

जहां ,

निवल अप्रत्यक्ष कर **(NIT)** = अप्रत्यक्ष कर –सब्सिडी

{ Net Indirect Taxes (NIT) = Indirect Taxes - Subsides }

इसलिए

साधन लागत = बाजार मूल्य -अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

इस अवधारणा का उपयोग करके , कारक या साधन लागत पर **GDP-** की गणना बाजार मूल्य पर **GDP** में से निवल अप्रत्यक्ष कर को घटाकर भी की जा सकती है ।

साधन लागत पर **GDP** = बाजार मूल्य पर **GDP** - निवल अप्रत्यक्ष कर

dation.org.in
02888

या

साधन लागत पर **GDP** = बाजार मूल्य पर **GNP** - निवल अप्रत्यक्ष कर

साधन लागत पर **NDP** = बाजार मूल्य पर **NDP** - निवल अप्रत्यक्ष कर

साधन लागत पर **NNP** = बाजार मूल्य पर **NNP** - निवल अप्रत्यक्ष कर

राष्ट्रीय आय (National Income)

- राष्ट्रीय आय वस्तुतः (एक लेखा वर्ष की अवधि के दौरान) एक देश के निवासियों द्वारा अपने गृह देश या विदेशों में अपनी भूमि , श्रम , पूंजी और उद्यमी प्रतिभा द्वारा अर्जित कारक/साधन आय का कुल योग है। यह साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद के बराबर होता है । इसे बाजार मूल्य पर **NNP** में से निवल अप्रम्यक्ष कर को घटाकर (जैसा कि ऊपर बताया गया है) प्राप्त किया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

साधन लागत पर राष्ट्रीय आय = बाजार मूल्य पर **NNP** – अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

{ National Income at Factor cost = NNP at Market Price - Indirect Taxes + Subsidies }

राष्ट्रीय आय के रूप में साधन लागत **NNP** को अपनाये जाने के निम्नलिखित कारण हैं :

- **NNP** देश के सभी निवासियों द्वारा अर्जित आय को दर्शाता हैं । यह सही भी है, क्योंकि इसमें विदेशियों द्वारा अर्जित आय को भारत की राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है । इस प्रकार **NNP** को **NDP** से अधिक वरीयता प्रदान की जाती है ।
- साधन लागत को प्रयोग इसलिए किया जाता है क्यांकि निवल अप्रत्यक्ष कर , जैसे–बिक्री कर , उत्पादन शुल्क आदि उत्पादन के साधनों/कारों के लिए किए गए भुगतान नहीं है । अर्थात् , उत्पादन के कारण को ही इसमें शामिल किया जा सकता है ।
- विभिन्न देशों के करों में समानता नही हैं ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- भारत जैसे विकासशील देशों में प्रायः वस्तुएं कीमतों के साथ मुद्रित नही की जाती हैं ।

हस्तांतरण भुगतान (Transfer Payments)

- हस्तांरण भुगतान का तात्पर्य सरकार द्वारा ऐसे व्यक्तियों द्वारा ऐसे व्यक्तियों को किए गए भुगतानों से हैं , जिसके बदले में इन व्यक्तियों द्वारा कोई आर्थिक गतिविधि या सेवा प्रदान नही की जाती है । वृद्धावस्था पेंशन , छात्रवृति आदि हस्तांरण भुगतान के कुछ उदाहरण हैं।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

व्यक्तिगत आय (Personal Income)

- व्यक्तिगत आय , सभी व्यक्तियों या परिवारों द्वारा एक वर्ष में अर्जित कुल आय होती है असमें **LPG** सब्सिडी जैसे हस्तांतरण भुगतान भी शामिल हैं । परिवारां द्वारा कल्याणकारी भुगतान प्राप्त किए जाते हैं , परन्तु ये भुगतान राष्ट्रीय आय के घटक नही होतें हैं क्योंकि ये हस्तांतरण भुगतान होते हैं ।
- इसी प्रकार , राष्ट्रीय आय लेखांकन में कुछ ऐसी आय शामिल कर ली जाती हैं जो व्यक्तियों की व्यक्तिगत आय होती हैं परन्तु जो व्यक्तियों

को वास्तव में प्राप्त नहीं होती हैं , जैसे–अवितरित लाभ , सामाजिक सुरक्षा हेतु कर्मचारी का योगदान , कॉर्पोरेट इन्कम टैक्स आय आदि इन्हें राष्ट्रीय में से घटाया जाता है । इस प्रकार व्यक्तिगत आय है :

व्यक्तिगत आय = राष्ट्रीय आय + हस्तांतरण भुगतान -कॉरपोरेट प्रतिधारित आय , आयकर , सामाजिक सुरक्षा कर

{ PI = NI + transfer payments - corporate retained earnings , income taxes , social security taxes }

व्यक्तिगत प्रयोज्य आय **(Disposable Personal Income ?)**

CAREER FOUNDATION

- व्यक्तिगत प्रयोज्य (व्यय योग्य) आय से आशय किसी व्यक्ति के पास उपलब्ध वास्तविक व्यय योग्य राशि से है । इसका अर्थ व्यक्तिगत रूप से भुगतान किए गए करों , जैसे – आय कर , संपति कर , प्रोफेशनल टैक्स आदि के भुगतान के बाद व्यक्ति के पास बची हुई राशि से है ।

इस प्रकार ,

व्यक्तिगत प्रयोज्य आय = व्यक्तिगत आय - व्यक्तिगत कर **{ DPI= PI - Personal Taxes)**

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- यह अवधारणाा व्यक्तियों के व्यय और बचत व्यवहार को जानने और समझने के लिए बहुत ही उपयोगी है । यह वह राशि है , जिसको खर्च किया या बचाया जा सकता है ।

प्रोज्य आय = उपभोग + बचत **(Disposable Income = consumption + Savings)**

चित्र:2 राष्ट्रीय आय से संबंधित विभिन्न अवधारणाएं

अभी तक हमनें राष्ट्रीय आय के निम्नलिखित मापकों की चर्चा की है:

- राष्ट्रीय आय = साधन लागत पर **NNP**
- साधन लागत पर **NNP** = बाजार मूल्य पर **NNP** - निवल अप्रत्यक्ष कर
- साधन लागत पर **NDP** = बाजार मूल्य पर **NDP** - निवल अप्रत्यक्ष कर

undation.org.in
70802888

- निवल अप्रत्यक्ष कर (NIT) = अप्रत्यक्ष कर –सब्सिडी
- NNP = GNP - मूल्यह्रास
- NDP = GDP - मूल्यह्रास
- GNP=GDP + विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय

राष्ट्रीय आय को प्रभावित करने वाले कारक (Factor Affeting national Income)

कोई ऐसे कारक हैं जो किसी देश की राष्ट्रीय आय को प्रभावित करते हैं । उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

CAREER FOUNDATION

- उत्पादन के कारक : सामान्यतया जब संसाधन अधिक कुशल और समृद्ध होंगे तो निश्चय ही राष्ट्रीय आय या GNP का स्तर उच्चतर होगा ।
- भूमि : भारी उद्योगो के लिउ कोयला , लौह और लकड़ी जैसे संसाधनों की उपलब्धता एवं उन तक पहुंच आवश्यक हैं । दूसरे शब्दों में , इन प्राकृतिक संसाधनाके की भौगोलिक - GNP के स्तर को प्रभावित करती है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- पूंजी: पूंजी आम तौर पर निवेश द्वारा निर्धारित होती है । यह अलग बात है कि निवेश अन्य कारकों पर निर्भर करता है , जैसे–लाभप्रदता , राजनीतिक स्थिरता आदि ।
- श्रम और उद्यमिता : मानव संसाधन की संख्या से अधिक महत्वपूर्ण मानव संसाधन की गुणवता या उत्पादकता है । श्रम शक्ति , नियोजन और शिक्षा अर्थव्यवस्था की उत्पादकता और उत्पादन क्षमता को को प्रभावित करती है ।
- प्रौद्योगिकी : अल्प प्राकृतिक संसाधनों वाले देशों के लिए यह कारक अधिक महत्वपूर्ण है । प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे हुए या होने वाले विकास और नवाचार के स्तर से राष्ट्रीय आय का स्तर प्रभावित होता है ।
- सरकार : सरकार निवेश हेतु अनुकूल कारोबारी परिवेश प्रदान करनें मे मदद कर सकती है ।यह कानून–व्यवस्था ,विनियमन आदि उपलब्ध कराती है ।
- राजनीतिक स्थिरता : एक स्थिर अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था संसाधनो के उचित आवंटन में मदद करती है । युद्ध , हमलों और सामाजिक असंतुलन से निवेश और व्यावसायिक गतिविधियों हतोत्साहित होती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

राष्ट्रीय आय का मापन (Measurement of National Income)

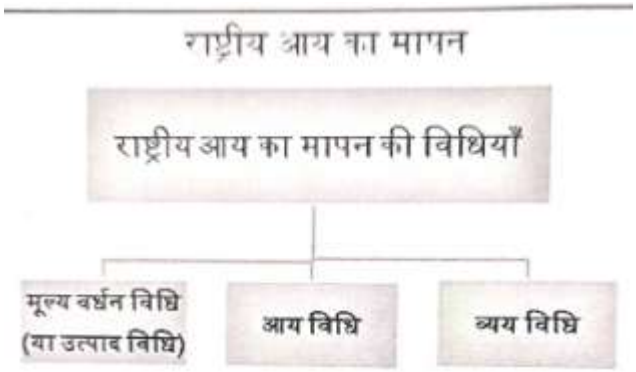

भारत में **GDP** का आंकलन केंन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा किया जाता है । किसी देश की राष्ट्रीय आय का निर्धारण निम्नलिखित तीन विधियों से किया जाता है :

- मूल्य वर्धन विधि (या उत्पाद विधि)
- आय विधि
- व्यय विधि

इनमे से किसी विधि को अपनाया जाए , यह आंकड़ो की उपलब्धता एवं उदेश्य पर निर्भर करता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

आय विधि(Income Method)

- यह पऋद्धति फर्मो द्वारा परिवारों को किए गए कुल भुगतानों के योग पर केंद्रित है , जिन्हें साधन भुगतान कहा जाता है । यह राष्ट्रीय आय का मापक है । यह राष्ट्रीय आय का मापक है । राष्ट्रीय से आशय एक देश के निवासियों और व्यवसायों द्वारा अर्जित कुल आय से है ।
- उत्पादन के साधन चार प्रकार के होते हैं तथा साधन आय भी चार प्रकार की होती है । भूमि ,श्रम, पूंजी और संगठन उत्पादन के चार साधन हैं तथा लगान , मजदूरी ,ब्याज और लाभ साधन आय के प्रकार हैं ।
- इस आय में अप्रत्यक्ष करों एवं मूल्यह्रास को जोड़ने तथ्ज्ञा सब्सिडी को घटाने पर **(GDP)** प्राप्त होती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

GDP = मजदूरी + लगान + लाभ + अप्रत्यक्ष कर - सबिसडी + मूल्यह्रास

- 'लाभ को आगो कर (प्रॉफिट टैक्स) , सभी शेयरधारकों को प्रदत लाभांश और प्रतिधारित लाभ/आय में उपविभाजित किया जा सकता है ।
- अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्रक के योगदान की गणना करने के लिए भारत में इस प्रकार की पद्धति को अपनाया गया है ।

- ऐसी कोई भी आय जिसके कारण वस्तुओं एवं सेवाओं का प्रवाह नहीं होता है या मूल्य वर्धन नहीं होता हैं , उसे आय विधि की गणना में सम्मिलित नहीं किया जाता है

आय विधि (Expenditure Method)

- **GDP** को किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादित अन्त्य वस्तुओं एवं सेवाओं पर किए गए कुल व्यय के रूप में भी देखा जा सकता है । किसी अर्थव्यवस्था में तीन मुख्य एजेंसियां –परिवार , फर्म और सरकार होती है । ये एजेंसियसां वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रया करती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

इस कुल व्यय को निम्नलिखित चार वर्गो मे विभक्त किया जा सकता है :

1. उपभोग : घरेलू बाजार मे उपभोक्ता परिवारों द्वारा किए गए व्यय ाके निजी उपभोग कहते हैं । यह व्यय उपभोक्ता परिवारों द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने वाली फर्मो को भुगतान के रूप में किया जाता है ।

2. निवेश व्यय :– निवेश से आशय एक निश्चित अवधि में एक अर्थव्यवस्था के पूंजीगत स्टॉक में हुई वृद्धि से है । इसमें फर्मो एवं सरकारी क्षेत्रकों द्वारा किए गए निवेश सम्मिलत है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

3. सरकारी व्यय : इस वर्ग में सरकार द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद पर किए गए व्यय को सम्मिलत किया जाता है । पेंशन योजनाओं , छात्रवृतियों एवं बेरोजगारी भत्तों आदि को सरकारी व्यय में सम्मिलत नही किया जाता है क्योंकि ये व्यय हस्तांतरण भुगतानों के अंतर्गत आते हैं ।

4. निवल निर्यात : विदेश में निर्मित उत्पादों (आयात) पर व्यय से पूंजी का बहिर्प्रवाह होता है, अतः इस व्यय को कुल व्य मं से घटा दिया जाता है । इसके विपरीत घेरलू फर्मो द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विदेशो में निर्यात से प्राप्त पूंजी को कुल व्यय में जोड़ा जाता है । इन दोनों के संयोजन से निवल निर्यात प्राप्त होता है ।

$$GDP = C + I + G + (X - IM)$$

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

निम्नांकित को राष्ट्रीय आय की गणना करते समय सम्मिलित किया जाता है :

- आय–गणना वर्ष में उत्पादित अन्त्य वस्तुयें तथा सेवायें ।
- स्वयं उपभोग के लिए किया गया उत्पादन ।
- अप्रयुक्त मध्यवर्ती वस्तुओं का स्टाक तथ्ज्ञा गण्ना वर्ष में उत्पादित पर उस वर्ष का न बिका स्टाक ।
- ब्रोकर्स कमीशन क्योंकि वह उत्पादक सेवा है ।
- सैनिक तथा सुरखा सेवायें ।
- सरकार द्वारा जनता को प्रदान की गयी निःशुल्क सेवायें ।
- लाभांश जो कम्पनियों के ही लाभ के भाग होते हैं राष्ट्रीय आय में सम्मिलित होते है ।
- भविष्य निधि कोष में मालिको का अंशदान ।
- घिसावट या पूंजी का उपभोग , सकल उत्पाद में तो शामिल होता है पर राष्ट्रीय आय जो शुद्ध उत्पाद होता है , में शामिल नही होता है।
- भारत में विदेशी बैंको द्वारा अर्जित लाभ जो विदेशी आय हैं , राष्ट्रीय आय मं से घटा दी जाती है । जबकि यू.एस.ए में स्थित स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की किसी शाखा द्वारा अर्जित लाभ , राष्ट्रीय आय में जोड़ा जायेगा ।
- संसद सदस्य को दिया जाने वाला भत्ताा ।
- विदेशी पर्यटकों द्वारा भारत में किया गया व्यय राष्ट्रीय आय में से घटा दिया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

GDP अवस्फीक एवं आधार वर्ष

GDP अवस्फीतक

यह मुद्रास्फीति को व्यापक रूप से मापने वाला मूल्य सूचकांक है । यह मौद्रिक या चालू मूल्य पर **GDP** का वास्तविक या स्थिर मूल्य पर **GDP** के साथ अनुपात को दर्शाता है । 1996 से **GDP** अवस्फीतक को त्रैमासिक आधार पर प्रकाशित किया जाता है ।इसका कारण यह है कि अर्थशास्त्री वास्तविक मूल्य अनुमानों को प्राप्त करने एवं सांकेतिक मूल्यों के प्रभाव को कम करने के लिए **WPI** या **CPI** उपयोग को वरीयता देते है।

- **WPI** और **CPI** के विपरीत , **GDP** अवस्फीतिक वस्तुओं और सेवाओं के एक निश्चित समूह पर आधारित नहीं है , अपितु यह संपूर्ण अर्थव्यवस्था को सम्मिलित करता है । **GDP** अवस्फीतिक का एक लाभ यह कि उपभोग के पैटर्न में परिवर्तनया नई वस्तुओं और सेवाओं का प्रवेश अवस्फीतिक मे स्वतः ही परिलक्षित होता है । जबकि **WPI/CPI** के सम्बंध में ऐसा न ही होता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- चालू मूल्यों पर प्रदर्शित **GNP** को स्थिर मूल्यों पर प्राप्त करने के लिये अवस्फीतक का उपयोग किया जाता है ।
- अवस्फीतक एक मूल्य सूचकांक है जो मूल्य में परिवर्तन के कारण **GNP** या **GDP** के मौद्रिक मूल्य में होने वाली परिवर्तनों को ठीक करने के लिए प्रयोग में लगाया जाता है । इसे मौद्रिक **GDP** को वास्तविक **GDP** या मौद्रिक **GNP** को वास्तविक **GNP** में भाग देकर प्राप्त किया जा सकता है , जो निम्न है :–
- **GNP** अवस्फीतक = मौद्रिक या चालू मूल्य पर **GNP**/वास्तविक या स्थिर मूल्य पर **GNP × 100**
- **GDP** अवस्फीतक = मौद्रिक या चालू मूल्य पर **GDP**/वास्तविक या स्थिर मूल्य पर **GDP × 100**

आधार वर्ष :–

- **GNP / GDP** की गणना को सरल बनाने हेतु अर्थशास्त्री वास्तविक **GNP / GDP** की गणना के दौरान एक मूल्य सूचकांक का उपयोग करते हैं । यह मूल्य सूचकांक वस्तुतः एक संख्या होती है , जो सभी स्तरों पर मूल्यों मे हुए परिवर्तन को प्रदर्शित करती है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- यह किसी अर्थव्यवस्था के मूल्य स्तर में हुए सामान्य परिवर्तन को दर्शाता है आधार वर्ष वस्तुतः एक सूचकांक के निर्माण के लिए संदर्भ वर्ष के रूप में प्रयुक्त किया जाने वाला वर्ष होता है , तथा आमतौर पर इसे 100 मान लिया जाता है ।
- हाल ही में भारत सरकार ने राष्ट्रीय लेखा की गणना करने के लिए आधार वर्ष 2004–02 से बदलकर वर्ष 2011–12 कर दिया । आधार वर्ष के चयन के लिए निम्नलिखित आधार है :
  - समष्टि आर्थिक मानदंडो की स्थिरता : यह एक सामान्य वर्ष होना चाहिए जिसमें उत्पादन , व्यापार और वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों मे अत्यधिक परिवर्तन न हो ।
  - आंकड़ो की उपलब्धता : इस वर्ष से संबंधित उपलब्ध आकड़ें विश्वसनीय होने चाहिए ।
  - तुलनात्मकता : आधार वर्ष ऐसा होना चाहिए कि दोनों ही वर्षो के लिये एक समान मानदंडो उपयोग किया जा सके । इसलिए यह हाल ही का कोई वर्ष होना चाहिए , अधिक पुराना नहीं होना चाहिए।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

राष्ट्रीय आय के मापन में कठिनाई (भारत के विशेष संदर्भ में)

राष्ट्रीय आय की गणना करते समय अर्थशास्त्रियों को कई समस्याओं का सामाना करना पड़ता हैं , उनमें से कुछ निम्नलिखित है :

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- **लेनदेन का गैर–मौद्रिकरण :–** राष्ट्रीय आय की गणना के दौरान आम तौर पर यह माना जाता है कि वस्तुओं या सेवाओं का आदान–प्रदान मुद्रा के लिए किया जाता है । लेकिन भारत में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में , बड़ी संख्या में आर्थिक लेनदेन वस्तु विनिमय के रूप में होते हैं । **GDP** अनुमानों में इस प्रकार की गतिविधियों का मापन करना अत्यंत कठिन होता है , क्योंकि इसके परिणामस्वरूप **GDP** का मान वास्तविक स्तर की तुलना में कम प्राप्त होता है ।
- **असूचित अवैध आय :–** भारतीय अर्थव्यवसाी का एक प्रमुख भाग अवैध या समानांतर अर्थव्यवस्था के रूप में संचालित होता है तथा अर्थव्यवस्था के इस भाग से सृजित आय अलिखित रह जाती है । सटीक **GDP** अनुमानों की गणना करने मे यह एक बड़ी समस्या है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- घरेलू , छोटे उत्पादकों आदि से सम्बंधित आंकड़ो की अनुपलब्धता :– उत्पादको की एक बड़ी संख्या पारिवारिक स्तर पर उत्पादन करती है या घरेलू उद्यमों का संचालन करती है । इन उद्यमों से संबंधित आंकड़े प्राप्त करना अत्यंत कठिन है । राष्ट्रीय आय लेखांकन के तहत अर्थव्यवस्था में होने वाली घरेलू सहायता और हाउसकीपिंग आदि जैसी देखभाल संबंधी गतिविधियों को नही ंसम्मिलित किया जाता है , यहां तक कि भारत मे गृहणियों द्वारा किया जाने वाले अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यो को भी **GDP** अनुमानों का हिस्सा नही माना जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- निरंतर विकसित होते सेवा क्षेत्र से संबंधित आंकड़े की अनुपलब्धता :– भारत के सेवा क्षेत्र में चरघातांकी वृद्धि दर देखी गई है । हालांकि सेवा क्षेत्र के कई भागों मे मूल्यवर्धन सटीक सूचनाओं पर आधारित नहीं है , इसीलिए राष्ट्रीय आय का प्राप्त मान वास्तविक मान से कम प्राप्त होता है ।

GDP मान मे नवीनतम विकास

- अब संवृद्धि दर का मापन अंतराष्ट्रीय स्तर के अनुरूप स्थिर बाजार मूल्यों पर **GDP** के माध्यम से किया जा रहा है । इससे पहले , संवृद्धि दर का मापन स्थिर मूल्यों पर साधन के रूप में किया जाता था ।
- सकल मूल्य वर्धन के क्षेत्रवार अनुमान अब साधन लागत के स्थान पर आधार मूल्यों पर प्रस्तुत किए जाएंगे ।
- अब **MCA21** डेटाबेस का भी उपयोग किया जाएगा । यह कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के तहत दाय किया गया कंपनियों का वार्षिक लेखा है । यह कॉर्पोरेट क्षेत्र के कवरेज को विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों तक विस्तृत करेगा । इसके अतिरिक्त विनिर्माण कंपनियों के लिए निर्मित यह डेटाबेस इन कंपनियों द्वारा विनिर्माण के अतिरिक्त की गई अन्य गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करने में भी सहायक होगा।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- स्टॉक ब्रोकर , स्टॉक एक्सचेंजों , परिसंपति प्रबंधन कंपनियों , म्यूचुअल फंड एवं पेंशन फंड तथ्ज्ञा **SEBI , PFRDA** और **IRDA** जैसे नियामक निकायों के खातों से संबंधित जानकारी सम्मिलित करके वित्तीय क्षेत्र का व्यापक कवरेज ।
- स्थानीय निकायों और स्वायत संस्थाओं की गतिविधियों के बेहतर कवरेज , साथ ही इन संस्थानों को प्रदान किए गए लगभग 60 प्रतिशत अनुदान/हस्तांतरण को कवर करना ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का